>

Title: Regarding impact of recent economic crisis in the markets of USA and European countries on Indian economy.

डॉ. मुरली मनोहर जोशी (वाराणसी): उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक सार्वजनिक महत्व का प्रश्न सदन के सम्मुख आपके माध्यम से रखना चाहता हूं। हमें मालूम है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में और यूरोप के अनेक देशों में फिर से एक नया आर्थिक संकट पैदा हो गया है। वह संकट केवल अमेरिका या अन्य दो-तीन देशों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया है। अमेरिका के अंदर जो कुछ हुआ है, वह बहुत गंभीर है और उसके परिणाम अमेरिका के निवासियों को तो भुगतने ही पड़ रहे हैं, लेकिन वहां जो भारतीय गए हैं और जो वहां हजारों की संख्या में हैं, उनको भुगतना पड़ रहा है। यहां की जो आईटी कंपनीज हैं, जो वहां से बीपीओ कर रही हैं, उनके प्रोजेक्ट्स कर रही हैं, जैसे ही अमेरिका के बाजार में गिरावट आती है, उन कंपनीज को नुकसान होता है, कंपनीज बंद होती हैं, उसका सीधा असर हमारे यहां की आईटी कंपनीज पर आता है। अब अमेरिका में एक नई मांग हुई है, जो इंग्लैंड में भी हो रही है और जो अन्य देशों में भी होगी कि अगर वहां बेरोजगारी हुई है, तो वहां जो बेरोजगार उस देश के निवासी नहीं हैं, जैसे गैर-अमेरिकन हैं, गैर-ब्रिटिश हैं, उन्हें वापस उनके देश भेजा जाए, उन्हें नौकरी न दी जाए। यह संकट लंदन में खड़ा हो गया है। सारे इंग्लैंड के अंदर आज आग लगी हुई है और उसका मुख्य कारण यही है कि भारतवासियों, एशियावासियों, जिनमें पाकिस्तानी भी शामिल हैं, के बारे में वहां यह मांग की जा रही है कि वापस भेजो। साथ ही साथ आप देखेंगे कि ग्रीस में, इटली में, स्पेन में, जर्मनी में, फ्रांस में बौखलाहट है। जर्मनी और फ्रांस डरे हुए हैं कि ये सारे लोग अब वहां से इनके यहां न आ जाएं। आज सारी यूरोपीय यूनियन के सामने संकट आ गया है कि वह इस बढ़ते हुए आर्थिक संकट से निपटने के लिए क्या करे। यूरोपीय यूनियन के सामने यह सामूहिक संकट खड़ा हो गया है। चीन घबरा रहा है, क्योंकि चीन का बहुत सारा पैसा अमेरिका के पास रखा हुआ है। भारत के सामने भी यह गम्भीर संकट है। हमारी अर्थव्यवस्था का एक बहुत बड़ा हिस्सा, हमारे डालर्स, सब के सब अमेरिकन ट्रेज़री में हैं। अमेरिका कर्ज भुगतान करने में असमर्थ हो रहा है। अभी आपने देखा कि उनके यहां क्राइसेज़ ही इसी बात का था कि अमेरिका कर्ज का भुगतान करने में असमर्थ हो रहा है। वहां के देश में अंदरूनी गड़बड़ हो रही है, वहां की पार्टीज के बीच में मतभेद है। बड़ी मुश्किल से ओबामा उस समझौते को करा पाए हैं। नतीजा यह है कि इसका सारा दुष्परिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला है। रुपए की कीमत गिरने और उठने से आयात और निर्यात पर प्रभाव पड़ता है। अगर रुपया बहुत ज्यादा गिर जाए तो इम्पोर्ट पर असर पड़ता है। एक्सपोर्ट वाला खुश होगा, लेकिन वह निर्यात करेगा किसे, क्योंकि आज अमेरिका और यूरोपीय बाजारों की खरीदने की ताकत कम हो गई है, खर्च करने की ताकत कम हो गई है। वे पहले ही इतना खर्च कर चुके हैं कि उसका भुगतान कहां से करेंगे। कई ट्रिलियन डालर्स का अमेरिका ने कर्ज लिया है और वह सबसे बड़ा कर्जदार देश है। तीन पीढ़ियों तक का कंज़म्पशन उन्होंने कर लिया है। उनके सामने सवाल यह है कि कर्ज तो इन्होंने लिया है, अब चुकाएगा कौन, पूरा कौन करेगा?

यह बड़ा गम्भीर सवाल है। यह इस बात की तरफ इंगित करता है कि जो डवलपमेंटल इकोनॉमिक मॉडल उन्होंने स्वीकार किया है, वह गलत है। वह सारी दुनिया के लिए खतरनाक है। मुझे आज प्रसन्नता हुई जब हमारे एक मंत्री जी ने बयान दिया कि हम इसलिए बचे हुए हैं कि हम सेव करते हैं। अमेरिका और यूरोप इसलिए फंसे हुए हैं कि वे सिर्फ खर्च करते हैं। इसलिए इकोनॉमिक डवलपमेंटल का जो मॉडल है, सेविंग का और पर्यावरण का, अभी शायद जयराम रमेश जी यहां मौजूद नहीं हैं, सारा सवाल इससे जुड़ा हुआ है। यह अर्थव्यवस्था का सवाल कोई मामूली सवाल नहीं है। इस संकट को सिर्फ अखबारों तक ही सीमित न समझें। एक और संकट पैदा हो रहा है। सोने का और चांदी का दाम बढ़ रहा है। इन्वैस्टमेंट बजाय किसी रचनात्मक काम के इस तरफ जा रहा है। लोग बुरे दिनों के लिए सोना खरीद कर रख रहे हैं, चांदी खरीद कर रख रहे हैं। ये सवाल गहरे हैं और केवल यह कह देने से कि हमारी ग्रोथ ठीक होगी, हम इससे संतुष्ट नहीं हैं। रंगराजन साहब ने कहा है कि बहुत मुश्किल है ग्रोथ को बनाए रखना। मंत्री जी कहते हैं कि ग्रोथ मुकम्मिल रहेगी। प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि ग्रोथ मुकम्मिल रहेगी। जबकि बाजार कहता है कि यह खत्म नहीं होगी। इसलिए यह गम्भीर प्रश्न है। इस पर भारत की समस्त अर्थव्यवस्था संकट में पड़ने वाली है, बेरोजगारी बढ़ने वाली है, महंगाई बढ़ने वाली है और ग्रोथ के सारे कयास नष्ट होने वाले हैं। इसलिए मेरा अनुरोध है कि इस पर मंत्री जी सदन में बयान दें और सदन इस पर पूरे तौर पर चर्चा करे कि जो हमने आज का इकोनॉमिक डवलपमेंटल का मॉडल ले रखा है, वह बिल्कुल गलत है। उसके स्थान पर एक नए भारतीय मॉडल के विकास करने की जरूरत है।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): उपाध्यक्ष जी, मैं जोशी जी की बात से पूरी तरह सहमत हूं।

उपाध्यक्ष महोदय: आप सम्बद्ध हो जाएं और अपना नाम भेज दें।

Hon. Members,

Shri Virender Kashyap,

Shri Arjun Ram Meghwal,

Shri Shivkumar Udasi,

Shri Devji M. Patel,

Shri C.R. Patil,

Shrimati Jyoti Dhurve,

Shri P.L. Punia,

Shri Ramen Deka are allowed to associate with the matter raised by Dr. Murli Manohar Joshi.

SHRI MAHENDRA KUMAR ROY (JALPAIGURI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, thank you for your kind permission to me to raise a serious matter in the House. ...(*Interruptions*)

श्री शरद यादव (मधेपुरा): जोशी जी ने जो सवाल उठाया है.

उपाध्यक्ष महोदय: उन्होंने प्रस्ताव रखा है कि बहस होनी चाहिए। सरकार इस पर सोचेगी।

श्री शरद यादव : आज जो ब्रिटेन में हो रहा है, उसका भी कुछ पता नहीं लग पा रहा है कि वहां वास्तव में क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है। मैं जोशी जी की बात से सहमत हूं कि आज वहां जो आग लगी है उससे पश्चिमी सभ्यता का पतन शुरू हो गया है। उस पतन का नतीजा यह होगा कि हम तो डूबेंगे ही आपको भी ले डूबेंगे।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आपकी बात रिकार्ड में आ गई है इसलिए अब आप बैठ जाएं।

श्री शरद यादव : उपाध्यक्ष जी, यह विषय क्योंकि नियम 377 में उठाया गया है इसलिए मैं इस पर ज्यादा नहीं बोलूंगा। यह जीरो आवर है, इसलिए मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा, केवल संक्षेप में, एक-डेढ़ मिनट में, अपनी बात को रखूंगा। मैं माननीय जोशी जी की सारी बातों के साथ संपूर्ण तौर पर सहमत हूं। एक बात और मैं उसमें जोड़ना चाहता हूं कि इस सभ्यता के बारे में डा. लोहिया कहते थे कि यह जो इतिहास चक्र है इसमें कभी हम लोग बहुत ऊपर थे, कभी कोई सभ्यता पीक पर जाती है और फिर नीचे आ जाती है। उनका कथन विंडिकेट हो रहा है क्योंकि यह सभ्यता, ब्रितानिया सभ्यता, अब पतन की ओर है। ब्रितानिया में जो कुछ हो रहा है, वह इस तरह से हो रहा है कि वहां का और भारत का जो मीडिया है वह कुछ समझ नहीं पा रहा है। वहां कुछ इस तरह से सेंसरशिप चली है कि सच्चाई और हकीकत बाहर आ नहीं रही है कि वहां क्या हो रहा है? मैं मानता हूं कि आपने सारे मूल्यों और नैतिकता को खत्म कर दिया, मौज करो, खाओ, पीयो और लूटो और वहीं लोग हैं जो एसएमएस कर रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (सारण): वैलेंटाइन-वैलेंटाइन करके सब नाश कर दिया।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : लालू जी, आपको जब बुलाएंगे, तभी बोलियेगा, अभी आप बैठ जाइये।

श्री शरद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, नई सभ्यता का जो विस्तार हुआ है, इस विस्तार को करने में उनकी सभ्यता का हाथ है, यह उन्हें ही समझ नहीं आ रहा है। आज ब्रिटानिया की संसद बैठकर माथा मार रही है कि क्या हो रहा है। अगर वे एक जगह खड़े होते हैं, तो दूसरी जगह हो जाता है और दूसरी जगह खड़े रहते हैं तो तीसरी जगह हो जाता है। हम उस सभ्यता को अपना आदर्श मान रहे थे और उसके चलते पूरे देश में एसएमएस तथा तमाम दूसरी तरह की चीजें चल रही हैं। जिस सभ्यता को हमने पकड़ा है, वह पतन की ओर जा रही है।

उपाध्यक्ष महोदय : आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री शरद यादव : वे तो डूबेंगे, उनके साथ हम भी डूबेंगे। इसलिए मैं कहता हूं कि उनकी नकल छोड़ो और देश बचाओ। जिस चीज में आपने उनकी नकल नहीं की, उस चीज में आप बच गए हैं। आपने बैंक में उनको नहीं माना, इसलिए बच गए। यदि उन्हीं को देख कर बैंक को भी खोल देते, तो आपकी भी वैसी ही दुर्दशा होती। मैं जोशी जी का पूरी तरह से समर्थन करता हूं।

SHRI GURUDAS DASGUPTA (GHATAL): Sir, there is a unanimity in the House. All the Members in the House are unanimous in telling the Government: "Do not be a victim to the American model of economic reforms and do not be a victim of the World Bank model in India." If you do it, the same thing that is happening in London will be happening in India. Inflation, unemployment retrenchment, poverty and deprivation are all resulting in social convulsion....(*Interruptions*) The Government of India and Dr. Manmohan Singh must give up their economic reforms and put India back on the Indian model so that India is safe from the decadence that has totally affected the Western world. We must have the Indian model – no American model, no World Bank model. We must be humane. We must take care of the human problems. Otherwise, the same will happen in India. We are sitting on a volcano....(*Interruptions*) So, the Government must stop the economic policy. I join Dr. Murli Manohar Joshi in demanding a discussion on the economic policy, privatization, liberalization and globalization.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, शरद यादव जी ने बहुत अच्छी तरह से बता दिया था। ब्रिटेन में जो कुछ हो रहा है, उसके कारण लाखों हिंदुस्तानी वहां से भाग रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि वहां से कैसे भागें। यह बहुत ही गम्भीर स्थिति है। हिंदुस्तान भी इसकी चपेट से बच नहीं सकता है। हम जानना चाहते हैं कि क्या सरकार ने इसे गम्भीरता से लिया है? आप तो हमेशा अमरीका के पिछलग्गु बने रहे हैं और हम विरोध करते रहे हैं। आप हर समय अमरीका-अमरीका ही करते रहे हैं। अब अमरीका दिवालिया हो गया है। आज हिंदुस्तान अपने पैरों पर खड़ा रहेगा और हिंदुस्तान का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। अगर अमरीका पर किसी ने भरोसा किया है और उसके पिछलग्गू बनी है, तो यह सरकार बनी है। देश पर खतरा है तथा हमें आशंका है कि अमरीका की वजह से कहीं हिंदुस्तान पर भी असर न हो जाए।

सवाल यह है कि सरकार वहां क्या कर रही है? भारत के लोग अमेरिका से भाग रहे हैं। उनका क्या इंतजाम किया है? भारतीय अमेरिका और इंग्लैंड से भाग रहे हैं।...(व्यवधान) उन लोगों के लिए...(व्यवधान) सरकार क्या व्यवस्था कर रही है ।

उपाध्यक्ष महोदय : मुलायम सिंह जी, अब आपकी बात पूरी हो गई। अब आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : उन लोगों के लिए जो हिन्दुस्तान के हैं, उनके लिए आपने क्या सोचा है? यदि उन पर संकट आएगा, तो उसका जिम्मेदार कौन होगा और उसके लिए भारत सरकार ने क्या किया है?...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: सब लोग अपने को सम्बद्ध कर रहे हैं। मामला गंभीर है।

â€¦(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (सारण): उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुरली मनोहर जोशी जी ने जो गंभीर सवाल उठाया है,...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप गंभीर हैं न?

â€¦(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद : हमारी बात सुनिए। अगर आपको इन चीजों में रुचि नहीं है तो हम बैठ जाएंगे।...(व्यवधान) सारा देश रो रहा है, साधु-संत रो रहे हैं, ऋषि-महर्षि रो रहे हैं, क्या हमारा देश बनने जा रहा है? मुरली मनोहर जोशी जी ने पाश्चात्य देशों का अंधाधुंध अनुकरण जो हम करते चले गये हैं और हम यह मानते गये कि हम एडवांस्ड हो गये हैं, हम दुनिया का मुकाबला कर रहे हैं। जिन बातों की तरफ उन्होंने इशारा किया है, खुलकर बात नहीं हो रही है। यह सवाल गरीबी और अमीरी का नहीं है, मारकाट का सवाल नहीं है। हमारा देश क्या बनने जा रहा है? भारत की भूमि स्वर्ग से भी बड़ी है और यह धरती ऋषि-मुनियों की मानी गई है जिसे भारत माता कहते हैं। आज हमारी भारत माता के सामने क्या हो रहा है? इसी दिल्ली में जिस सभ्यता का अनुकरण करने के कारण ये सारी परेशानी हो रही है, नंगे होकर हजारों लोग सड़कों पर निकले, जश्न मनाया और अपने चेहरे पर रंग-बिरंगे टैटूस बनवाए। बहुत गंभीर बात है। यह देश अब इन सब बातों से बचा नहीं है और न बचने वाला है। हम इस पर बहस चाहते हैं चाहे देश के सामने जो कुछ भी नतीजा आए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : अब आपकी बात समाप्त हो गई न?

â€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : लालू जी, आप हमसे बात कीजिए। इधर देखकर बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद : समलैंगिक का कानून आपने एडॉप्ट कर लिया।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : अब आपका हो गया न? आपने सिर्फ सम्बद्ध करने की बात कही थी। अब आपकी बात समाप्त हो गई।

â€¦(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद : महोदय, महिला महिला से शादी करेगी,...(व्यवधान) इसको आपने चुपचाप बैठकर एडॉप्ट कर लिया।...(व्यवधान) आईपीसी की धारा 377 के तहत पुरुष पुरुष से शादी करेगा। देश की जनता को अभी सारी बात का खुलासा नहीं हुआ है और शर्म के कारण हम लोग बातों को नहीं बता रहे हैं। धारा 377 है जिसमें अननैचुरल ऑफेंस जिसे कहते हैं, दिल्ली हाईकोर्ट का एक फैसला आया और लोग यहां हाथ पर हाथ धरकर बैठे रह गये, आगे नहीं गये। यह ऋषियों-महर्षियों का देश है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात संक्षेप में कहिए।

श्री लालू प्रसाद : बहुत गंभीर मामला है। कृपया हमारी बात सुनिए।

चाहे अनचाहे जो भी है, हमारी बात रिकॉर्ड में रहेगी, आप इसे मानिए या न मानिए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी बात रिकॉर्ड में रहेगी।

श्री लालू प्रसाद : आप इन्टरस्ट मत लीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : आप ज्यादा इन्टरस्ट मत जगाइए।

...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद : आप सुनिए, आपका काम सुनना है। हम सबसे पहले सूर्य मंदिर गए थे, वहां हमने चारों तरफ नंगी तस्वीरें देखीं। हमें काफी आश्चर्य हुआ कि भगवान के मंदिर में नंगी तस्वीर क्यों है, तरह-तरह के आसन क्यों हैं? खजुराहो मंदिर पर आसन क्यों हैं? तब हमें किसी ने बताया कि एक समय था कि सैक्स के

प्रति लोगों की विरक्ति हो गई थी, जनसंख्या घट रही थी। भारत की लाज है कि भारत की बेटियां और महिलाएं आंख उठाकर नहीं देखती हैं। हमें बताया गया कि सैक्स के प्रति तब लोगों की विरक्ति हो रही थी, मंदिर के प्रति, रिलीजन के प्रति लोग भीरु हो गए थे। जब जनसंख्या का खतरा होने लगा तब नंगी तस्वीरें दिखाई गई ताकि सैक्स के प्रति लोगों के मन में भावना आए, तब ये बनाया गया था। लेकिन अब कितने मंदिर बनाएंगे? नंगापन, चैटिंग, वैलेनटाइन, इन्टरनेट, आई-पॉट, फेसबुक अमेरिका से लाए और आज चारों तरफ नग्नता हो रही है। क्या हमारा देश बचा है? हम जीतकर आते है, यहां हाथ पर हाथ रखकर टुकुर-टुकुर देखते हैं। जोशी जी ने ठीक कहा है कि यह भारत है, भारत की भूमि है, हमारी संस्कृति बरबाद की जा रही है, चौपट की जा रही है, हमारी विरासत चरमरा रही है। इन चीजों पर ध्यान नहीं दिया गया है, ध्यान दिया जाए।...(व्यवधान)

श्री विजय बहादुर सिंह (हमीरपुर, उ.पू.): महोदय, मैं कुछ कहना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : हमने आपका नाम नहीं बोला है। लालू जी, आपकी बात हो गई है, संक्षेप में बोलिए।

...(व्यवधान)

श्री विजय बहादुर सिंह : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमें इस स्थान से बोलने की इजाजत दी जाए।

उपाध्यक्ष महोदय : आपको इजाजत है।

कि जब-जब भारत में दूसरे मॉडल की नकल की गई है, तब-तब धड़ाम से गिरा है। 1954 और 1957 के बीच हम समझते थे की यूएसएसआर बहुत बड़ी चीज है। हम एक लैफ्टिस्ट माडल को यहां ले आए। कोई भी अधिकारी अगर कालमार्क्स की किताब लेकर, कैपिटल की किताब लेकर खाकी फुल पैंट पहनकर घूमता था तो लगता था बहुत संपन्न है, बहुत इंटेलेक्चुअल है। हम उस मॉडल में आए, जहां से वह मॉडल शुरु हुआ, यूएसएसआर के साथ बहे और धड़ाम से गिर गए। आप जानते हैं कि कजाखिस्तान से चेचेन्या सात भाग हुए। नव लैफ्टिस्ट मॉडल, इस समय इंडस्ट्रियल अनरैस्ट आदि, इसकी देन है। जब हम वहां से नकल नहीं कर पाए तो अमेरिका की तरफ चले गए। इसका नतीजा हो रहा है कि हमारे देश में कारें और मोटर के पुर्जे ज्यादा बन रहे हैं जबकि गेहूं और दाल कम पैदा हो रहा है। हमारा कहना है कि हिंदुस्तान की असली ताकत एग्रीकल्चर बेस, गांव की सभ्यता बेस है, उस पर फोकस किया जाए। आप जान लीजिए, एक टैस्ट 2010 में हुआ था, 12 साल तक के बच्चों को अमेरिका में व्हाइट हाउस दिखाया गया तो 87 परसेंट बच्चे व्हाइट हाउस नहीं पहचान पाए जबकि हिन्दुस्तान के 97 परसेंट पहचान गए।

13.00 hrs.

लेकिन जो हिंदुस्तान के बच्चे थे, उनमें से 97 परसैन्ट पहचान गये। इससे सिद्ध होता है कि हमारे यहां की इंडस वैली सिविलाइजेशन उनसे ज्यादा बुद्धिमान है, उनसे ज्यादा पढ़ी-लिखी है। इसलिए हमें अपना ही मॉडयूल अपनाए रखना होगा।